

II-237

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरेश्वरी महाविहारी



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीसर्वलोकहिताय नमः ॥

यत्ता न (ह) न मः संघाय

हमयदवा गममचूवचकनक

मन्मथं कचज्जां यनालय रुजं गमसु निमनिकि नले इत्य

सर्वधकानां नैनास्यते विलास्य युग्मदिनदृश्यां ऊचविश्रामः

त्रिंशत्तमोऽङ्कस्तु गामूनि बलवच्चनं प्रसूमाया ह्यसर्वः

का

मधनिद्रुल्लेखः

आयांता (अ) शुक्रा मा जसू न सून गना सिद्धि गंधर्वा गभ यक्षां कूं
रा शुक्रि शु वि अ ग नू द द वि ह वा स क व क्रा दि द वा यू जा यः
लेख पचा य ध जि शु व म न मि तं कुं ह ग न या हं वा च या मि पु नः
मि न सि न सा नं महा या नं स जूं ॥ उं न भा वू द्वा य ॥ उं न भा ध
मा य ॥ उं न मः सं घाय ॥ ॥ भा व म पि शु न सि धि सि धि

१ को ज म पि ॥

गभर्च ऊ कू दि वि शु वि स वि चि क्रे स्मा व हा व कू ति स्य जू रू म
पि कू त म कि नो मि सं वू द्वा मा लाः न रु ति रु ग नू ध यां ति कि न यां
ति दि न रू ॥ १ ॥ कू पि न इ वि क प कूः कि न नि स ख दा खः
दु वि क क न क व रूः दू ल व क्रा य ना कू सून चि न य वि रु स सूप
हा म शु न सि ॥ द म व ल न व नि रू सूप हा नं य हा नं ॥ २ ॥

मदनवचविजु कायनकुरुकस्तु दिवुवनहिनकस्तुःकिन
नांजावहुरु समसुखरुलदाउ रुववहानसिद॥दगवव X॥
३ ॥असुवसुवगधना यागजत्ताग्रहव सुकववुवन
धनाःलाकगीदिकभाग्यस्वपिनमनूजधनाजुडथा निस्वयंउ
दगववल् X॥ ४ ॥उदयगिगिननल् विंइमाकजनामनि

मिनमिकवदंगा चकचकयजाना नविपविमयवाङ्ग सर्वथासा
पिगूना॥दगववल् X॥ ५ ॥दिददलगनपांडःभीलेनेकिः
ससाक कलिनविदवजत्ताःसर्वचूजमनिऊजूवीगतमदवा
गसर्वथासापिगुफा ॥दगववल् X॥ ६ ॥यववरुऊचकता
पाउभां धाधवका ऊपनियमकनां ह सामवचूयवफा जूमवक

मन्त्रानि सापिबुद्धापि शुभादगवत्ल॥ १ ॥ हिमगिः
निगिषन्तां सर्वजज्ञाय विनिष्ठिपूजननहनदकृष्टायुचर्मन
वियस्रुगिनिवत्तपूषा सापि शुभा विगूनि॥ दगवत्ल॥
८ ॥ कनिनकुनिसयानि इरूयादानअना शुत्रयनित्रपि मं
या विरुनभाधचना अन्निस्निगिषुका कामयंकापिसरुग॥

दगवत्ल॥ ९ ॥ कृववयदवनिलपुल्लिकायनाकृ
सूत्रविपुववहंता विभ्रुकुनिस्रवृपि हवित्रपिचित्रशुभा
गरुवास्यात्रमूका॥ दगवत्ल॥ १० ॥ कलिनकुनकवां
रुवकनामावृनां कृषुयनित्रपिका वीसंगरंगकदकृ
समन्त्रकलिनांग सापि शुभा कृतासा॥ दगवत्ल॥

११ ॥ हिमससिकुसुमांशु मशपा मभूमाकुदृढक
थिनकुजांशु गोकु योहाकिहसा वत्रयूहसहि नसा
वनिकाष्ठ वल्म ॥ दशवत्र ५॥ १२ ॥ गजमुखद
गनिकः सर्वथा विप्रगंता अविगतमदवात्रिः वषट्पि
नगच गद्यनिन पिशुफा वा नूनिवानमस्तु ॥ दशवत्र ५॥

॥ १३ ॥ जूतसिकुसुमनिलयकसाक्रिकगंगि नानः
विनअयूषा यषट्पिचहंता विनयनजनयानि सापिस
फाकुमात्रा ॥ दशवत्र ५॥ १४ ॥ जूगनवसनहिना नि
यथाग्न नूजागा वरु विविधविधनाः युतवर्षु नदहा उरु
यगनिमिहिना कपिनल्म पिशुफा ॥ दशवत्र ५॥ १५ ॥

अथ यथिदमहाद. तं सविद्यागिना आकटक मद्रमसिशा
या गगानिका आर्मी. ००० आधिआगनसनाक मोहिनाकपि
युफा ॥ दठावत्र ५॥ १७ ॥ अमवत्र दक वत्र ऊक्रे
यागिना याः दिवि युवि न न ग. लाक या ला क थ न य
आधिआगयसक अधीनां कपि युफा ॥ दठावत्र ५॥ १८ ॥

रव ऊल निधिमल्ल. मा दहाला रु नां ग सुनिक पित्र रु ना
या ला सु नां मा ध चिं ना सम सु ख रु न दी बालि ग नि पि यु फा
॥ दठावत्र ५॥ १९ ॥ अजुलान व द वत्र न न म सि पि यु
फाः क रु वि ग न स य न विष या यु ध न का ल यु रु यु रु रु ल
प वि द रु मा न जा गं नि यं स न न च व ल न मु न स ॥ १९ ॥

निर्धकूलकूलगंगां निप्रिडाङ्गाय निमिं वज्र निनभनां क
यनमस्तुनस्य ॥ गधं मुनिः कपिसं वप्रपिसुतस्य नकिं
यन गुननिन गुनसागत्रस्य ॥ २० ॥ सुप्रहानं कवे क
स्य हानमृत्सुं तत्र प्रवृत्तं नृहानं निमिवाधनं निममस्तुहि
भानवि ॥ २१ ॥ यूनः प्रहानं यूनप्रवर्हिना वविः यूनः

ससांकायूनप्रवसर्वदेवस्य कृत्वा कृन्मनथेयाहृथागः
नागनिवृद्धकथं नवृद्धस्य ॥ २२ ॥ सुप्रहानं सूनं कृत्वा
शीयापकृदिनदिन ॥ वृद्धधर्मसंयं चयुषमासिदिन
दिन ॥ २३ ॥ गुह्यालोका गुप्तामहा मुनिअलसधर्मपू
श्वदयं निदाय खनलियु गानिं वज्र लूथ समूयादिनं ख

94

人臣

विनदःश्वविनासनं२ गच्छमूनिननुजगनस्वयहवेस्य
युकासिनं॥ २ ॥ अत्रियशगंरुदनुत्रियनामयसगि
विनवस्तिनं२ वज्रकूटलगुगगिनिवत्रगपूष्टविनिवि
युतं॥ ३ ॥ विपूवविशिष्टमहायूकलविमलनिलः
सर्वजिनं२ नविनिकुमधुसूगन्धकलाहलदिव्यकूसमसाः

हिनं॥ ४ ॥ शकटयुमासहसुदलत्रलमयइतित्राजि
नं॥ १ ॥ हिलंघकालविचित्रनात्रस्ययंरुचेयनिवासिनं॥
५ ॥ धवलवयूषकवूषणाशनविशानवाचनसुदलं॥
चलमूत्रिनीत्रयिकनकयलालसंकुचितं॥ ६ ॥
नानाकसमवनसाहितरुनिनगभवमिसाहितं॥ १ ॥ चतुर्चः

यकनागकमवयूकालमनाहचं॥ १ ॥ नागगभवज
रुकिंनवगवुमूनिरिद्रवासिनं॥ १ ॥ यमरुमोभाद्रवाष्टिनं
विविधियुपरात्रक्षेत्रिनं॥ ८ ॥ धर्ममेवितल्लोविन
मरुदवनमागनं॥ १ ॥ दधमरुवाधनार्थधर्मभारुवागिः
भवं॥ १ ॥ साकिकावनसार्वनार्थयकयूनिवासिनं॥ १ ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार II-237

महाभारतस्य अष्टादशोऽध्यायः ॥ १० ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कर्णकं १ वाङ्मयिनिवन्
कृतं निर्वाच्य निवन्गश्च वसुदेवकर्मणः ॥ ११ ॥ वाङ्मयिनिवन्

विष्णुमयवर्णितं सावयवसमनं ॥ १ ॥ शृंगममिति विष्णुना ॥
विष्णुमयवर्णितं सावयवसमनं ॥ २ ॥ शृंगममिति विष्णुना ॥

देव
ॐ
ॐ
ॐ

ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॥ उ किमंथी वा विमलिन पूर्व पुन दी
तयूववं १ सत्व स ह सकाति भ्रुषदिका नय कं पितं ॥
१ ॥ श्री गाय सिंदु यो माना थं पृथ काय गु हा द धि २ दा
न श्री वा क म हा य सा द न वि शि धा न से मा ग न ॥ २ ॥
लो ह मा ह विषय काम ना ग ल्प वि ना स नं २ पू य पु रु वः

लेन व मि न स र्व स त्व हि नं क वं ॥ ३ ॥ द व मा न व ऊ ऊ
व चि त ग नू उ कि न नु स हा न गं २ द व मा न व ऊ स न कि र्यः
क य ग न क स जा नि कं ॥ ४ ॥ वृ ष्ण व नं क पि न धा यं स
व हि न स जा नि कं १ ग च र्व दान व ऊ स न वा स कि रु मिः
सि नं ध न व चि तं ॥ ५ ॥ द वि ग न यू व ल रु द ज

मिनिर्वंजनलंकृतं २ सिंहकायसवाङ्मयकंधर्मकायम
रावलं ॥ ३ ॥ सर्वभूतपालिभक्तिकवस्तुनस
चिंतलं १ नलकृत्तलमकृत्तलमकृत्तलमकृत्तलमकृत्तलम
॥ चतुर्विंशतिदिवसवनमनूकाटिसूजानिकं
१ ज्ञायविंशतिकाटियापं मालतंगविधिसनं ॥ ४ ॥

मालजंगननूपसम्भ्रविकामधुविमादितं १ यनवज
निवजनशुल्वादिद्यनूपसन्पकं ॥ ५ ॥ कनूष
कनूषविवापयकं मरुवावज्जानिकं १ कननवजनिः
वजनशुल्वादिद्यनूपसन्पकं ॥ १० ॥ दहिनदिस
गीखमुलपनवामसमुपरावकं १ दहिनवामककमु

मकं यकरुवसलितकं ॥ ११ ॥ ॥ पूषा धूपनेव यदिः
 पं सगभ्रमात्रविषयनं २ दृष्टु श्रुयनापचासत्रवज
 यधुसूसाहितं ॥ १२ ॥ ॥ वृद्धवाहसमत्रनित्यं का
 यवाकसचिह्नकं २ यनसत्वाहगतिनिर्णययुग्माया
 संयुतं ॥ १३ ॥ ॥ नित्यी वृद्धगीतश्रुतं समाये ॥ ३

पूर्वदिगापदि २

२ उं नमात्ताकनाथाय ॥ पूर्वदिगंयति ॥ नृत्ताकयात्तपी
 नवर्षसमाहिता २ दक्षिवाहनवज्रदसं नमामिः सत्र
 नाशनं ॥ १ ॥ ॥ समत्रसर्वमेनलोकायत्रं ॥ ५ ॥
 अग्निदिगंयतिः नृत्तिदवनात्रकवर्षसमाहिता २ द्याग
 वाहनहाकीदसं नमामिथीद्वनाशवनं ॥ २ ॥

दक्षिणदिगं यनिः धर्मवाकं निवेतवर्धुसुखरिना २ मयूत्र
वाहनं दंदरुसं नमामि श्री कर्मवाकं ॥ ३ ॥ नेत्र
स्यदिगं यनिः ऊरुवाकं स्यामवर्धुसुखरिना २ युगवाहन
नरुऊरुसं नमामि श्री नेत्रस्यवाकं ॥ ४ ॥ यष्टिम
दिगं यनिः वज्रवाकं स्यामवर्धुसुखरिना २ मंगववाहन

ननागदरुसं नमामि श्री वायुकिवाकं ॥ ५ ॥ वायूवा
दिगं यनिः रिममूत्रकि वक्रवर्धुसुखरिना २ मृगवाहनः
नक्षऊरुसं नमामि श्री वायूवाकं ॥ ६ ॥ उरुवदि
गं यनिः कृवात्रमूत्रकि कंक्रुमवर्धुसुखरिना २ अश्ववाहन
राऊरुसं नमामि श्री ऊरुवाकं ॥ ७ ॥ ॐ नदिगय

तिमहेश्वरं रुटिकवर्धसुसाहिनाश्चर्मवाहानत्रिसुवह
 रुं नमामि श्रीः नैलाकनाथं ॥ ६ ॥ जगन्दिगयनि
 : आदिना नायनस्यामवर्धुयुधरिनाश्चर्मवाहानत्रिकः
 रुं नमामि श्रीः दामादत्रं ॥ ७ ॥ उद्धदिगयनिः व
 प्रसन्नं पीतवर्धसुसाहिनाश्चर्मवाहानयुरुं नमा

मिथीः निवृत्तनं॥ १० ॥ ॐ निःवाक्याना नवभावं स
माय॥ ॥ ॐ ॥ ॥ रडनभावू दाय॥ मध्वगनवि
जयसिद्धिः वेवाचनकिनआव सिंहमासनस्तिनस्थानव
र्ह॥ ॐ ॥ नमास्तु नमास्तुः पंचकिनगावनं॥ १ ॥
पूर्वदिगत विक्रययीः अक्षालसिद्धिकिनवल्लगाऊमासन

५३४१६

उिता ॥ १ ॥ समवननिरुंशीमहावूडं २ नमासि न
वचनं वूजा पापना गय ३ः सदायन वूडपदवलदः
हिम ॥ २ ॥ ऊत्स ऊत्स ऊत्स नयलसल यमा निधि
याचिता २ नतमयित्वं दानयूचि न यवममर्तु नर्था वूष ॥
३ ॥ ऊगगयालि ध्यानकै मन्त्रनिकनकवर्धयुलः

स्ववं २ वड नमात्रयुभाखयलिकन वाधिरुऊन वस्तिगं ॥
४ ॥ उदत्रमुखकवनयन ऊगनित थावदून्दुरि
नादिना २ विविधिमाल ऊच्यकरयऊन कान्तिहागनुयेः
वाकिगं ॥ ५ ॥ विविध ऊर्मऊनकऊगनां कूपथ कू
मकिदिना सिना २ ऊनयूचि नमाऊदगिन मुक्तिपदवः

वनायकं॥ ३ ॥ वसवसुतसुनयालवत्सुत्रमा
 गसिन्न गिनपत्रक २ दशमिनिधि कुजवात्रसंशकं वरु
 दशनसंगना॥ ४ ॥ वजाचार्यकुजवात्रं नचिन्नः
 सुनिमालिका २ गिनयचलिनकातननमिदुक्त विविधा
 रुकिप्रयुक्तिना॥ ५ ॥ गुनियंचनथागगनां नुसमाफ॥

रक्षापात्रा॥ ७

रुडनभालाकनाथय॥ काणागत्रचत्ररुमिविक्रयनपात्रं
 वयवादादशकुनावृष्टिभाक्रना॥ १ ॥ जूवादिनः
 श्रीवृगमल्लाकभयं गुत्रवंधूदं रुमयुनसिद्धिनत्रिंश
 दव॥ २ ॥ चथचक्रगमनजात्रागमनत्रिलिना
 यूप्रियुक्तिगंसत्ररुपानिष्टेनाकनाथं॥ ३ ॥ यन

हगकि यनभा कृपदानायादयंकडुइलानोमिमिभ्रभं
 ॥ ५ ॥ ॐ निकाया नु नो नुं समाफ ॥ ॥ ॐ ॥
 १ उं नभा लाक नाथाय ॥ अ वृक्ष वदनदहसत्र सिजसं
 एव १ ददिन वत्र धत्र कसक सलधला ॥ ॥ श्री
 वृगभं वत्र नूरय पुदाना सल उधालन १ दूर्ग गिरुल

ना वरुनिगालन सा कृपदाना ॥ २ ॥ अमिना रुमि
 यंधला निर्मत्र वदना १ श्री कयला कं वत्र सत्र नत्र
 पूजिना ॥ ३ ॥ अ वदनाया विक वस ॐ नचि
 क १ साधव सिगगभ सन तिथि न निवात्रि ॥ ४ ॥
 ॐ नि साध वल नो नुं समाफ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ सच ऊगना ॥

अ वृक्ष वदन ॥ ५